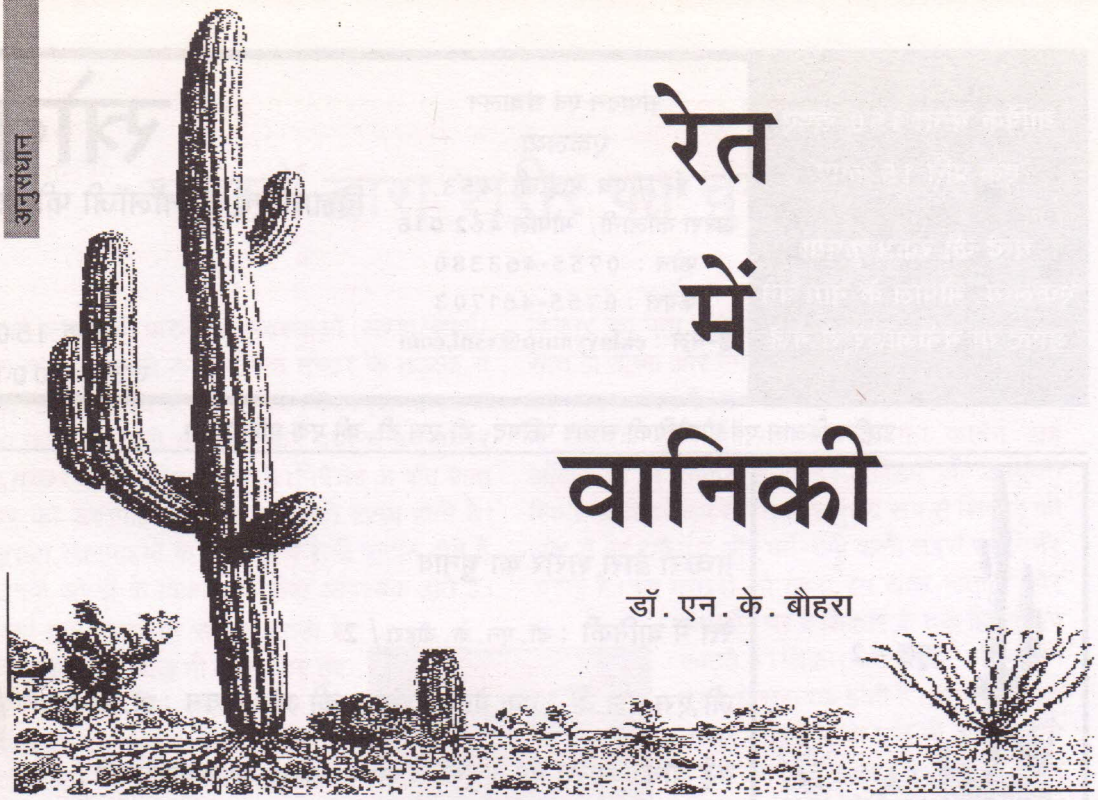

रेत में वानिकी

डॉ. एन. के. बौहरा

भारत का तकरीबन 12 प्रतिशत भूभाग रेतीला है। यह राजस्थान, गुजरात, हरियाणा व पंजाब प्रांतों में बिखरा पड़ा है। इस 12 प्रतिशत रेतीले भूभाग का 60 प्रतिशत क्षेत्र पश्चिमी राजस्थान में है और थार मरुस्थल कहलाता है। मरू प्रदेश की कठिन परिस्थितियों और विषम जलवायु के चलते यहां के लोग संघर्षमय जीवन जीने को बाध्य हैं। यहां गर्मियों में तापमान 50 डिग्री तक पहुंच जाता है, साथ ही धूलभरी तेज़ आंधियां इस क्षेत्र में जीवन को दुष्कर बना देती हैं। मॉनसून के दौरान मरू प्रदेश में वर्षा बहुत ही कम तथा अनियमित होती है। इसके बावजूद यहां के लोग सुखी एवं समृद्धशाली जीवन जीने हेतु प्रयत्नशील हैं। इनकी मुख्य समस्या विषम भौगोलिक स्थितियों और जलवायु से पार पाने की है। इस क्षेत्र में विकास हेतु चलायमान टीले और जल एक प्रमुख समस्या है। इसके अलावा भूमि, परती भूमि जैसी कई अन्य समस्याएं भी हैं।

पूरे मरू प्रदेश में बालू व बालू के टीलों की भरमार है। राजस्थान, गुजरात, हरियाणा और पंजाब के मरू क्षेत्रों का लगभग 88,078 वर्ग कि.मी. भूभाग टीलों से प्रभावित है। राजस्थान के थार मरुस्थल का तकरीबन 58 प्रतिशत भाग विभिन्न आकार, प्रकार व नाप के टीलों से भरा है। कुछ लम्बे चौड़े टीले तो 80-100 मीटर तक की ऊंचाई वाले हैं। तेज़ हवाओं से ये टीले एक जगह से दूसरी जगह चले जाते हैं तथा फसलों, आवासीय स्थानों, नहरों, रेल की पटरियों व आम यातायात के साधनों को इतना अधिक प्रभावित करते हैं कि दिन प्रतिदिन के सारे क्रियाकलाप रुक से जाते हैं।

मरू वानिकी अनुसंधान

मरू क्षेत्र की समस्याओं का सबसे बेहतर उपाय है सघन वृक्षारोपण। इस क्षेत्र की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर वैज्ञानिकों ने वानिकी क्षेत्र में अनुसंधान कर कई नवीन तकनीकों का निर्माण किया है। इनके उपयोग से मरू क्षेत्र की वानिकी में एक नई क्रांति लाने के प्रयास जारी हैं। वानिकी अनुसंधान की कुछ महत्वपूर्ण तकनीकें इस प्रकार हैं-

1. टीला स्थिरीकरण : इस प्रदेश क़ी प्रमुख समस्या है चलायमान टीले। टीला स्थिरीकरण के मार्ग में सबसे बड़ी